

सिगनल एवं दूरसंचार प्रशिक्षण केन्द्र गोरखपुर

पूर्वोत्तर रेलवे



ST-02

आग से रोकथाम, प्रथमोचार, व्यक्तिगत संरक्षा, स्वच्छता

एस.टी. - 02

सिगनल अनुरक्षक

विवरण:

आग से रोक थाम, प्रथमोपचार, व्यक्तिगत, संरक्षा स्वच्छता

विषय सूची

	पृष्ठ संख्या
1 कार्य स्थल भंडारों, औजारों इत्यादि की जानकारी और उनकी सफाई	01
2 वर्दी के उपयोग की जानकारी, व्यक्तिगत संरक्षा उपकरणों और उनके उपयोग तथा वैक्यूम क्लीनर का प्रयोग	01
3 विभिन्न स्थलों पर आग लगने के कारण जानना, आग बुझाना।	01
4 अग्निशामकों की किस्में और उनके उपयोग	02
5 आग लगने की चेतावनी और आग बुझाने वाली एजेन्सियों की जानकारी	03
6 आग की दुर्घटनाओं को टालने के लिए अपनायी जाने वाली कार्यविधि	04
7 मनुष्य के आग से जल जाने पर बरती जाने वाली सावधानियां	04
8 प्रथमोपचार	05
क प्रथमोपचार का उद्देश्य	
ख मरहम पट्टी और स्लिंग्स	
ग घाव और रक्तश्राव	
घ बिजली का झटका लगना	
ङ विष गैस और अम्ल (एसिड)	
च बनावटी श्वास देने की विधियां	
छ हताहतों को ले जाना	
9 खपत होने वाले, बिगड़ जाने वाले ज्वलनशील तथा भंगुर भंडारों को लाने ले जाने और उनके भंडारण की जानकारी।	14
10 तूफान वर्षा, जंग लगने और आग के कारण होने वाले नुकसान से बचाव	15
11 प्रश्नावली	15

1. कार्य स्थल भंडारों, औजारों इत्यादि की जानकारी और उनकी सफाई

कार्य स्थल साफ सुथरा होना चाहिए। स्वच्छता से कार्य करने पर अच्छा वातावरण बनता है। जहां तक संभव हो प्रत्येक उपकरण या यंत्र इस प्रकार का होना चाहिए कि उनसे वातावरण दूषित न हो।

भंडारों के अन्दर सामान तितर-बितर अथवा बिखरे हालत में नहीं होना चाहिए। प्रत्येक सामान क्रम के अनुसार पृथक् रूप से उचित स्थान पर रखा होना चाहिए। खुले सामान जैसे नट वोल्ट, पिन, कीलें आदि किसी टोकरी, बिन या कन्टेनर में रखना चाहिए।

औजार साफ सुथरे और कार्य करने के हालत में होने चाहिए। विभिन्न कार्यों के लिए उपयुक्त औजार का प्रयोग किया जाना चाहिए।

2. वर्दी के उपयोग की जानकारी, व्यक्तिगत संरक्षा, उपकरणों और उनके उपयोग तथा वैक्यूम क्लीनर का प्रयोग

वर्दी के उपयोग की जानकारी

वर्दी कर्मचारी की पहचान है अतएव: ड्यूटी पर सदैव वर्दी पहनना चाहिए। इससे कर्मचारियों के बीच एकता एवं कार्य कुशलता का एहसास होता है।

व्यक्तिगत संरक्षा उपकरणों और उनके उपयोग

हाई वोल्टेज सर्किट पर कार्य करते समय रबर के दस्ताने, रबर की चटाई, इंसूलेटिड औजार आदि का प्रयोग करना चाहिए। वेल्डिंग करते समय प्रोटेक्टिव ग्लास का प्रयोग करना चाहिए। कार्य करते समय हमेशा जूते पहनें। फायर फर्नेन्स आदि पर कार्य करते समय ढीले ढाले कपड़े न पहनें।

वैक्यूम क्लीनर का प्रयोग

वैक्यूम क्लीनर का प्रयोग ऐसे स्थान की सफाई के लिए किया जाता है जहां डस्टर, जूट आदि से नियमित रूप से हाथ से साफ न किया जा सके। इसमें धूल को उड़ाने (ब्लाविंग) या सोखने (सकिंग) का आप्सन होता है। जहां धूल उड़ाने से कान्टैक्ट के बीच जाकर हाई रजिस्टेंस पैदा करने का खतरा हो वहां सोखने के रूप में इस्तेमाल करते हैं। जैसे रिले रूम, एक्सचेंज आदि। इन स्थानों पर वैक्यूम क्लीनर से साफ करने से गीयर की अच्छी सफाई हो जाती है तथा वातावरण शुद्ध एवम स्वास्थ्यवर्धक रहता है।

3. विभिन्न स्थलों पर आग लगने के कारण जानना, आग बुझाना

आग लगने के कारण जानना

1 सर्वप्रथम आग लगने के कारणों को जानने का प्रयास करना चाहिये।

साधारण नियम 6.10 और इसके सहायक नियम का पालन किया जाना चाहिए।

स्टाफ, पेट्रोल वैगन, माल गोदाम, बैटी रूम आदि जगहों पर धुम्रपान न करें अथवा खुली आग का प्रयोग न करें।

4 आग लगने पर निम्न उपाय करें

(क) आग के नजदीक से फर्नीचर, रिकार्ड्स आदि हटा दें।

(ख) यदि कोई वैगन या कोच में आग लगी हो तो उसे दूसरे वैगनों से अलग कर दें।

(ग) दरवाजे, खिड़कियां आदि बन्द कर दें।

(घ) आग पर मिट्टी या बालू डालें।

(ङ) फोम द्वारा आग बुझाने वाली मशीन का प्रयोग करें।

- (च) यदि किसी के कपड़े ने आग पकड़ ली हो उसे कम्बल से ढक दें।
- (छ) पानी द्वारा आग के तापमान को कम करें।
- 5 आग बुझाते समय माल एवं जीवन की सुरक्षा करने का कोशिश की जानी चाहिए।
- 6 यदि आग भयानक हो तो म्यूनिसिपल या रेलवे फायर ब्रिगेड को विलम्ब बुलाना चाहिए।
- 7 आग के कारणों की जांच जितनी जल्दी हो सके पूरी करके संबंधित अधिकारियों को सूचित करना चाहिए।

आग बुझाना

जैसे ही आग लगने की जानकारी मिले निम्नलिखित कार्य करना चाहिए।

- 1 दूसरों को आग की चेतावनी देने के लिए “आग-आग” का शोर मचाएं। किसी को दूसरों को बुलाने के लिए भेज दें ताकि आग बुझाने में मदद मिल सके।
- 2 फायर बकेट, फायर इस्तिगवीशर आदि की मदद से आग को शुरूआती दौर में ही बुझाने की कोशिश करें।
- 3 रेलवे फायर ब्रिगेड, सिटी फायर ब्रिगेड और अन्य रेलवे के सीनियर आफिसियल जो ड्यूटी पर उपलब्ध हों उन्हें सूचित कर दें। उन्हें यह भी बताएं कि क्या क्या सामान आग के कारण नष्ट हो रहा है (जहां तक संभव हो)।
- 4 यदि कोई व्यक्ति आग की चपेट में आ जाता है तो उसे तुरन्त हास्पिटल में भिजवायें।
- 5 यदि बिजली के संयंत्रों में आग लगी हो तो बिजली की आग पर पानी का प्रयोग नहीं करना चाहिए अथवा किसी इस्तिगवीयर के प्रयोग से पहले मेन स्वीच बंद कर दें।
- 6 कमरा, कोच आदि के दरवाजे व खिड़कियां बंद रखें जब तक कि फायर ब्रिगेड न पहुंच जाये।
- 7 आग के नजदीक का सामान, वैगन आदि हटा दें जिससे कि आग अधिक न फैल सके।
- 8 मौके पर उपस्थित सीनियर मोस्ट आफिसियल वहां बकेट चेन सिस्टम, फायर पार्टी, रेस्क्यू पार्टी और वाच पार्टी आदि का प्रबंध करेंगे ताकि सही तरीके से कार्य हो सके।
- 9 जो आग बुझाने वाले यंत्र उपलब्ध हो उन्हें तुरन्त प्रयोग किया जाना चाहिए ताकि आग को बुझाया जा सके।
- 10 फायर ब्रिगेड के पहुंचने पर फायर आफिसर को नजदीक उपलब्ध पानी के बारे में तुरन्त बताया जाना चाहिए। और उन्हें जिस सहायता की जरूरत हो तुरन्त उपलब्ध कराया जाना चाहिए।
- 11 आग के कारण की जांच की जानी चाहिए यदि कोई क्लू मिले तो उसे सुरक्षित कर लिया जाना चाहिए।

4. अग्निशामकों की किस्में और उनके उपयोग

अग्निशामक चार प्रकार के होते हैं।

- 1 सोडा एसिड टाइप
- 2 फोम टाइप
- 3 ड्राई केमिकल पाउडर टाइप
- 4 कार्बन डाई आक्साईड टाइप

सोडा एसिड टाइप अग्निशामक

उसका डिस्चार्ज नोजल अग्निशामक के बाड़ी के ऊपर ही होता है। इसका प्रयोग लकड़ी, कागज, कपड़ा आदि जहां केवल ठंडा करके आग बुझाने की जरूरत हो, वहां किया जाता है। इसका प्रयोग बिजली संयंत्रों, पेट्रोल, पेन्ट आदि की आग बुझाने के लिए नहीं करना चाहिए। इसको प्रयोग करने के लिए इसका प्लंजर किसी भी कठोर वस्तु से टकराया जाता है, प्लंजर नीचे जाने के बाद वापस आ जाता है और गैस नोजल से बाहर निकलने लगती है।

फोम टाइप अग्निशामक

इसका नोजल अग्निशामक यंत्र के सबसे ऊपर (Cap पर) रिलीजिंग डिवाइस के साथ लगा होता है। यह कैरोसीन,

पैट्रोल, पेंट आदि लगने पर इस्तेमाल किया जाता है। यह आग के उपर फैलकर उसे कम्बल की भांति ढक लेता है जिससे आग को हवा नहीं मिलती और आग बुझ जाती है। इसका सीलिंग वाल्व हैन्डिल क्लोज्ड पोजिशन में होना चाहिए तथा नोजल जाम नहीं होना चाहिए। इस अग्निशामक का प्रयोग बिजली की आग बुझाने के लिए भी प्रयोग कर सकते हैं। प्रयोग से पहले स्विच ऑफ कर बिजली को बंद कर दें।

ड्राई केमिकल पाउडर टाइम अग्निशामक

इसका प्रयोग कार, गैस सिलिंडर, ट्रांसफार्मर, बिजली की मोटर, बैट्री चार्जिंग रूम आदि में आग बुझाने के लिए किया जाता है। अग्निशामक का वजन महसूस करके यह जाना जा सकता है कि अग्निशामक कार्य करने लायक है या नहीं। इसका प्रयोग करने के लिए अग्निशामक को हाथ में लेकर इसके स्पिन्डिल नाब से सेफ्टी क्लिप को हटा देते हैं। अग्निशामक को दाहिने हाथ से ठीक से पकड़ते हुए बांये हाथ से नाब को छेड़े। अग्निशामक से निकलते हुए पाउडर को आग लगी हुई सामग्री पर डालें।

कार्बन डाइ आक्साइड टाइप अग्निशामक

अग्निशामक के सिरे पर एक व्ही वाल्व लगा होता है इसमें एक डिस्चार्ज ट्यूब हार्न के साथ लगी होती है इसका प्रयोग बिजली की आग बुझाने के लिए किया जाता है जहां बिजली बंद न की जा सके। यह बिजली का कुचालक होता है। इसके अतिरिक्त इसका प्रयोग नाजुक मशीनों या यंत्रों की आग बुझाने के लिए किया जाता है। इसका प्रयोग करने के लिए अग्निशामक को लेकर आग लगी जगह तक ले जाएं। बाये हाथ से डिस्चार्ज हार्न को पकड़ लें। दूसरे हाथ से व्हील वाल्व को घड़ी की सुई के विपरीत दिशा में घुमाएं। डिस्चार्ज को जलते हुए सामग्री की ओर कर दें। इसका डिस्चार्ज स्नो की शक्ल का होता है, स्नो से हाथ को जलने से बचाने के लिए “हाथ के दास्तानो” का प्रयोग करें।

5. आग लगने की चेतावनी और आग बुझाने वाली एजेंसियों की जानकारी

आग लगने की चेतावनी

आग लगने की चेतावनी स्वरूप निम्न उपाय करें।

- 1 ‘आग-आग’ का शोर मचायें जिससे दूसरों को आग की चेतावनी मिल जाये।
- 2 किसी को भेजकर दूसरों को सहायता के लिए बुलायें।
- 3 फायर अलार्म बजाने का उपाय करें या स्टेशन की घंटी लगातार दो मिनट तक बजाकर फायर की सूचना दी जाय।
- 4 फायर अलार्म सुनकर स्टाफ अलार्म बजने वाली जगह इकट्ठे हों। वहां से आग लगने वाली जगह की ओर सबसे सीनियर कर्मचारी के मार्ग दर्शन में जाये।
- 5 वक्रेट स्टैन्ड, हौस पाइप, आदि की चाबी ड्यूटी पर उपस्थित स्टेशन मास्टर या अन्य के चार्ज में होना चाहिए और आसानी से उपलब्ध होना चाहिए।
- 6 अग्निशामक का समयानुसार जांच और अनुरक्षण होना चाहिए। यह कार्य सब इंस्पेक्टर फायर के देख रेख में होना चाहिए। इसका रिकार्ड भी रखा जाना चाहिए।

आग बुझाने वाली एजेंसियों की जानकारी

- 1 वहाँ के रेलवे फायर ब्रिगेड, सीटी फायर ब्रिगेड की जानकारी रखें और रखें और उन्हें आग लगने की सूचना तुरन्त दें।
- 2 फायर ब्रिगेड के आने पर उपलब्ध पानी के श्रोत की जानकारी उन्हें तुरन्त दें।
- 3 इसके अतिरिक्त आग की जानकारी, जोखिम की जानकारी आदि दे।
- 4 जो सहयोग वे चाहें उन्हें तुरन्त उपलब्ध कराया जाय।

6. आग की दुर्घटनाओं को टालने के लिए अपनाई जाने वाली

साधारणतया आग लापरवाही के वजह से लगती है। यदि यह शुरूआती दौर में पता न चलें और इसको बुझाया न जाय तो यह बहुत बड़ी नुकसान पहुंचा सकती है। इसलिए यह प्रत्येक रेलकर्मी की जिम्मेदारी है कि आग से बचने की सावधानियों का पालन करें और आग की स्थिति में तुरन्त कार्यवाही करके आग को फोरन बुझा दें। इसके लिए फर्स्ट एड, आग बुझाने के साधन जो परिसर में रखे हों उनका प्रयोग करें या नजदीक में आग बुझाने के जो भी साधन हो उनका प्रयोग करें।

आग की दुर्घटनाओं को टालने के संबंध में कुछ आवश्यक सावधानियां

- 1 जहाँ मना किया गया हो, वहाँ कभी भी धूम्रपान न करें और न ही कोई माचिस या अन्य चीज़ जलाए।
- 2 जहाँ धूम्रपान वर्जित नहीं है, वहाँ पर एश स्ट्रे रखे होने चाहिए और उनका प्रयोग करें।
- 3 जलती हुई सिगरेट, बीड़ी आदि के टुकड़े न फेंकें इनके फेंकने से पहले सुनिश्चित कर लें कि उन्हें बुझा दिया गया है।
- 4 अपने कार्य स्थल को साफ रखें और कभी भी कागज के टुकड़े या अन्य कूड़ा अपने नजदीक इकट्ठा न होने दें।
- 5 कूड़ेदान रखें और कूड़ा कूड़ेदान में ही फेंकें और उन्हें इमारत से दूर सुरक्षित जगह पर रखें।
- 6 विद्युत के सर्किट को ओवर लोड न होने दें और विद्युत के संस्थानों का समय पर निरीक्षण करें।
- 7 पेट्रोल, पेंट, गैस या अन्य ज्वलनशील पदार्थ, इनको विशेष प्रकार से बने स्टोर में ही रखें।
- 8 विस्फोटकों से भरे पैकेट्स, डब्बे आदि को न तो इधर उधर फेंकें तथा न ही खींचें।
- 9 वे लोग जो लोहे की कील वाली जूते पहने हों, वे विस्फोटकों को न छुएं। विस्फोटकों के पास खुली आग न ले जाये।
- 10 बजली की आग बुझाने के लिए पानी का प्रयोग कभी न करें।
- 11 बैट्री कक्ष में खुली आग न ले जाये। जब भी बैट्री चार्ज हो रही हो वहाँ जलती चीज़ को न ले जाये।
- 12 यह सुनिश्चित करें कि आफिस, स्टोर एवं वर्कशाप में उपयुक्त 'फायर व्केट' अग्निशामक आदि की जांच की जाती है, तथा स्टाफ को इनके प्रयोग की जानकारी है।
- 13 यह सुनिश्चित करें कि नियत समय पर सारे आग बुझाने वाले उपकरण, अग्निशामक आदि की जांच की जाती है, तथा स्टाफ को इनके प्रयोग की जानकारी है।
- 14 आर.पी.एफ. स्टाफ जहाँ नियुक्त है, उनकी वहाँ के परिसर में आग की जानकारी लेना और उन्हें बुझाने की विशेष जिम्मेदारी है, विशेषतया छुट्टी के समय या रात के समय वे यह भी जांच करेंगे कि किसी व्यक्ति की असावधानी से यदि आग लगन का खतरा हो तो उसकी रिपोर्ट आफिसर इंचार्ज को करेंगे ताकि उचित कार्यवाही की जा सके।

7. मनुष्य के आग से जल जाने पर बरती जाने वाली सावधानियां।

- 1 जले हुए कपड़े जो घावों पर चिपके हो नहीं हटाने चाहिए।
- 2 छाले नहीं फोड़ने चाहिए।
- 3 जले हुए भाग को अनावश्यक नहीं दूना चाहिए। यदि छूना ही पड़े तो हाथ किटाणुनाशक रसायन से शुद्ध कर लेने चाहिए।
- 4 घावों पर तेल इत्यादि नहीं लगाने चाहिए।
- 5 घावों को किटाणुनाशक ड्रेसिंग से ढक कर रूई रखकर पट्टी बांधनी चाहिए। यदि छाले हों तो पट्टी ढीली बांधनी चाहिए। और छाले न हों तो पट्टी कस कर बांधनी चाहिए। ड्रेसिंग के लिए धुले तथा प्रेस किये

- हुए कपड़ों की अन्दर की तह प्रयुक्त की जा सकती है।
- 6 जले हुए अंगों को पट्टियों से बांध कर स्थिर करें। अंग हिलने से छिल जाने का खतरा है।
 - 7 यदि थोड़ा जला है तो गर्म हल्की मीठी चाय जितनी पी सकता है पिलाए और अस्पताल ले जायें।
 - 8 यदि अधिक जला हो तो
 - (क) यदि डाक्टरी सहायता चार घंटे के अन्दर प्राप्त होने की आशा हो तो खाने पीने को कुछ न दें और शीघ्र अस्पताल ले जायें।
 - (ख) यदि डाक्टरी सहायता चार घंटे के अंदर प्राप्त होने की आशा न हो तो पानी पिलायें। (पानी के प्रत्येक गिलास में एक चुटकी नमक और एक चुटकी मीठा सोडा डाल दें तो और अच्छा होगा) और अस्पताल ले जायें।
 - 9 यदि चेहरा जल गया हो तो एक मीटर लम्बे चौकोर कीटाणुरहित कपड़े के टुकड़े के मध्य में एक छिद्र करके उससे चेहरा इस प्रकार ढकें कि छिद्र नाक के सामने रहे और चेहरा पूरा पूरा ढक जाये। जबड़े पर पट्टी बांध कर ड्रेसिंग को स्थिर रखें और अस्पताल ले जाय।

8. प्रथमोपचार

- (क) प्रथमोपचार का उद्देश्य
- (ख) मरहम पट्टी और स्लिंग्स
- (ग) घाव और रक्तस्राव
- (घ) बिजली का झटका लगना
- (ङ) विष गैस और अम्ल (एसिड)
- (च) बनवाटी श्वास देने की विधियाँ
- (छ) हताहतों को ले जाना

(क) प्रथमोपचार का उद्देश्य

भारतवर्ष में अभी भी अस्पताल इतने कम हैं कि डाक्टरी सहायता हर जगह तुरन्त नहीं प्राप्त होती इसलिए प्राथमिक सहायता की जानकारी प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है। प्राथमिक सहायता की जानकारी के कारण व्यक्ति साधारण दुर्घटनाओं (जैसे बच्चे के गले में गोली फस जाना, कान में कीड़ी घुस जाना, चाकू से कट जाना आदि) के कारण घबराता नहीं है। जीवन में ऐसा समय भी आता है जब दुर्घटना में गलत उपचार करने के कारण किसी प्रियजन को प्राणों से हाथ धोना पड़ता है और अन्त में जब पता चलता है कि हमारी गलती के कारण प्राण गये तो जीवन भर पछताना पड़ता है। इसलिए प्रथमोपचार की जानकारी अत्यन्त आवश्यक है।

(ख) मरहम पट्टी और स्लिंग्स

पट्टियां मुख्यतः पांच प्रकार की होती हैं।

गोल पट्टी

ये सबसे अधिक काम में आने वाली पट्टियां हैं। ये एक इंच से छः इंच तक विभिन्न चौड़ाई की पट्टियां काम में आती हैं। ये पट्टियां सामान्यतः समान मोटाई वाले अंगों पर बांधी जाती हैं, जैसे अंगुलियां, बांहें, टांगें आदि।

तिकोना पट्टी

एक मीटर लम्बे चौड़े चौकोर कपड़े को कर्ण पर काटने से दो पट्टियां बन जाती हैं। यह उन स्थाना पर बांधी जाती है जहां गोल पट्टी नहीं ठहरती जैसे सिर, कंधे आदि।

सिकुड़नी पट्टी

यह पट्टी खर की बनी हुई 2.1/2 इंच चौड़ी व 4 फुट लम्बी होती है। एक सिरे पर बांधने के लिए फीता लगा होता है। यह पट्टी धमनियों और शिराओं में बहते हुए रक्त को कुटिल द्वारा रोकने के काम आती है।

चिपकने वाली पट्टी

यह पट्टी टीन या प्लास्टिक के डब्बों में बंद आती है। एक इंच से छः इंच तक विभिन्न चौड़ाई की होती है। छोटे छोटे घावों पर ड्रेसिंग रोकने के लिए इस पट्टी को क्रॉस (X) में चिपका दिया जाता है।

विशेष पट्टियां

विशेष कार्यों तथा स्थानों पट्टियां बनाई जाती हैं। जैसे पेट के लिए बहु पुच्छी पट्टी (Many Tailed Bandage), गुदा के लिए T- पट्टी आदि। प्राथमिक सहायता में इन पट्टियों की आवश्यकता नहीं पड़ती।

पट्टियों के कार्य

- 1 ड्रेसिंग व गद्दियों को यथा स्थान रोके रखता।
- 2 हड्डी की टूट में अंगों को हिलने डुलने से रोकने के लिए पट्टियां बांधना।
- 3 घायल भाग को झोली बनाकर सहारा देना।
- 4 रक्त प्रवाह रोकने के लिए दबाव बनाना।
- 5 सूजन व दर्द कम करना।

(ग) घाव एवं रक्तश्राव

घाव होने पर कोशिकायें तो कटती ही हैं कभी कभी धमनियां और शिरायें भी कट जाती हैं। कोशिकाओं, धमनियों अथवा शिराओं के कटने से रक्तश्राव होता है। अधिक मात्रा में रक्त निकल जाने से रक्तचाप कम हो जाता है और मस्तिक तक रक्त कम मात्रा में पहुंचता है। इसलिए नाड़ी संस्थान अपना कार्य ठीक नहीं कर सकता और घायल मूर्छित हो जाता है।

घाव चार प्रकार के होते हैं

कटे हुए घाव

किसी धारदार वस्तु (जैसे चाकू, ब्लेड आदि) से कटा हुआ। इस प्रकार के घावों में धमनियों और शिराओं के कटने की अधिक सम्भावना होती है।

फटे हुए घाव

मशीनों के पुर्जों से, काँच से, पशुओं के पंजों से लगे हुए घाव। इनके किनारे टेढ़े-मेढ़े होते हैं। इस तरह के घाव कटे हुए घाव से कम खतरनाक होते हैं।

कुचले हुए घाव

किसी गुठीले हथियार (जैसे लाठी, भारी पत्थर द्वारा) की चोट द्वारा कुचले हुए घाव।

छिदे हुए घाव

जिनका मुह छोटा हो परन्तु गहराई अधिक हो (जैसे चाकू घुसाने से या गोली लगने से)।

घावों में हानिकारक किटाणुओं का प्रवेश

घावों में हानिकारक किटाणुओं का प्रवेश करना ही छूत कहलाता है। किटाणु अत्यन्त सूक्ष्म जीव होते हैं जो नंगी

आंखों से नहीं देखे जा सकते। किटाणु पानी, वायु, धूल, मिट्टी इत्यादि में होते हैं। किटाणु घाव में प्रवेश करते ही बढ़ना आरम्भ कर देते हैं और घाव में सूजन, दर्द और लाली पैदा हो जाती है। अन्त में घाव में पीप (Pus) पड़ जाता है। मरे हुए किटाणु, मरे हुए श्वेत रक्ताणु और मरी हुई शरीर की कोशिकाओं का मिश्रण पीप कहलाता है।

किटाणुरोधक रसायनिक पदार्थ

श्वेत रक्ताणुओं को किटाणुओं के विरुद्ध सहायता करने के लिए घाव पर किटाणुरोधक रसायनिक पदार्थ इस प्रकार है

- 1 एफ्रीफ्लेवीन
- 2 मर्क्यरीक्रोम
- 3 टिन्चर आयोडीन
- 4 कुए की लाल दवा (पोटेशियम परमैंगनेट)
- 5 कार्बोलिक एसिड

पेट के घाव का उपचार

- 1 पीठ के बल लिटाकर घुटने मोड़ दें। और सिर और कन्धे ऊंचे करें।
- 2 यदि आंतें या अन्य अंग बाहर आ गये हैं तो उन्हें अन्दर करने का प्रयास ना करें।
- 3 घाव पर ड्रेसिंग रखकर हल्की पट्टी से सहारा दें।
- 4 खाने पीने को कुछ न दें।
- 5 घायल को कम्बल से ढकें परन्तु गरम पानी की बोतलें ना लगायें।
- 6 तुरन्त अस्पताल ले जायें।

छाती के चुसैले घाव का उपचार

- 1 घाव पर ड्रेसिंग और मोटी गद्दी रखकर कसकर पट्टी बांधें
- 2 घाव में होकर वायु न आ जा सके।
- 3 तुरन्त अस्पताल ले जाएं।

कुचलाव का उपचार

- 1 त्वचा के नीचे कोशिकाओं के फट जाने से रक्त त्वचा के नीचे ही भर जाता है और नीला पड़ जाता है।
- 2 ऐसी अवस्था में उस भाग पर ठंडे पानी की पट्टी बांधनी चाहिए।
- 3 यदि पानी में स्प्रिट मिला ली जाय तो अच्छा हो।
- 4 परन्तु आंख के उपचार में स्प्रिट नहीं मिलानी चाहिए।

रक्तश्राव का सामान्य उपचार

- 1 घायल को सुविधाजनक स्थिति में लिटा दें।
- 2 घायल भाग को ऊंचा उठायें यदि हड्डी टूटी हो तो ऊंचा न उठायें।
- 3 यदि धमनी या शिरा कटे हो तो आवश्यक कुटिल दबाव डालें और दबाव बनाए रखें।
- 4 घाव के ऊपर के कपड़े हटाओ। घाव को साफ करो। यदि कोई अन्य वस्तु (जैसे कांच) घाव में हो और आसानी से निकाल सकती हो तो निकाल दो। जमे हुए रक्त के थक्के मत छुड़ायें।
- 5 ाव पर ड्रेसिंग रखकर ऊंची गद्दी रखो और कसकर पट्टी बांध दें।
- 6 घायल अंग को स्थिर करें।
- 7 यदि संभव हो तो घायल अंग पर ठंडी पट्टी रखें।

धमनियों से रक्तश्राव का उपचार

धमनियों से रक्तश्राव का उपचार के लिए अंगुलियों और अंगूठे की सहायता से सम्बंधित दबाव स्थानों पर सिकुड़नी बाँच कर दबाव बनाए।

दबाव स्थान (Pressure Points)

वह स्थान जहाँ धमनी किसी हड्डी के ऊपर से अथवा कठोर माँस पेशी पर से गुजरती है, दबाव स्थान कहलाता है क्योंकि इस स्थान पर दबाने से धमनी का रक्त प्रवाह बंद किया जा सकता है।

हाथों का दबाव स्थान

- 1 हँसली का (Subclavian) कंधे के लिए
- 2 बगल का (Axillary) कुहनी के ऊपर बाँह के लिए
- 3 बाँह का (Brachial) कुहनी और कुहनी के नीचे के हाथ के लिए
- 4 कुहनी का (Brachial at Elbo) कुहनी के नीचे की बाँह के लिए
- 5 कलाई का बाहर वाला (Radial) हथेली के लिए
- 6 हथेली का (Palmaer Arch) उंगलियों के लिए

पैरों के दबाव स्थान

- 1 जाँघ में (Femoralin Gorin) जाँघ के लिए
- 2 जंघा पर (Femoral) घुटने के लिए
- 3 टखने पर अन्दर की ओर (Anterior Tibial) तलवे के लिए
- 4 टखने पर बाहर की ओर (Posterior Tibial) तलवे के लिए

पट्टी बांधते समय बरती जाने वाली सावधानियां

- 1 सिकुड़नी पट्टी बांधने का समय पट्टी पर लिख देना चाहिए।
- 2 प्रत्येक 15 मिनट बाद पट्टी ढीली करनी चाहिए और यदि रक्तश्राव बंद न हो तो फिस कस देनी चाहिए।
- 3 यदि दुबारा पट्टी बांधी गयी है तो यह बात भी लिख देनी चाहिए।
- 4 सिकुड़नी पट्टी स्पष्ट दिखाई पड़नी चाहिए इसके ऊपर दूसरी पट्टी अथवा पट्टियां नही बांधनी चाहिए।
- 5 यदि वास्तविक सिकुड़नी पट्टी न मिले तो उसके स्थान पर मोटे कपड़े की पट्टी, अंगुली के बराबर मोटी नरम रस्सी बांधी जा सकती है। साइकिल के ट्यूब को चीर कर भी सिकुड़नी पट्टी बनायी जा सकती है।

भीतरी अंगों से अप्रत्यक्ष रक्तश्राव

इस रक्तश्राव के कई कारण हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में निम्न उपाय करें।

मुंह से थूक के साथ रक्त का आना

रक्त मसूड़ों से जीभ में अथवा गाल में घाव होने से बह रहा है।

उपचार

- 1 यदि श्राव थोड़ा है तो मुंह में बर्फ या ठंडा पानी भरें।
- 2 यदि रक्त श्राव अधिक है तो साफ कपड़े से घाव पर अंगुलियों और अंगूठे से दबाव डालें।

मुंह में खांसी के साथ रक्त आना

रक्त चमकदार लाल रंग का झाग के रूप में हो तो रक्त श्राव फेफड़ों से है।

उपचार

- 1 खाने पीने को कुछ न दें।
- 2 छाती पर ठंडे पानी की पट्टी रखें।
- 3 घायल को तुरन्त अस्पताल पहुंचायें।

मुंह से उल्टी के साथ रक्त आना

रक्त मैले रंग का हो तो आमाशय से आ रहा है

उपचार

- 1 खाने पीने को कुछ न दें।
- 2 आमाशय पर बांधी छाती से नीचे ठंडी पट्टी रखें।
- 3 घायल को तुरन्त अस्पताल पहुंचायें।

नाक से रक्त आना

नाक से रक्त बह रहा हो।

उपचार:

- 1 नाक साफ न करने दें
- 2 नाक बन्द न करें
- 3 मुंह खोलकर मुंह से श्वास लेने को कहें।
- 4 सिर आगे झुकाकर खुली हवा के सामने बिठावें।
- 5 नाक के कठोर भाग के नीचे दबाव डालें।
- 6 माथे, भौह और नाक के दोनों ओर ठंडे पानी की पट्टी रखें।

कान से रक्त श्राव

खोपड़ी की तली की हड्डी टूटने से रक्त कान से बहता है।

उपचार

- 1 कान को बन्द न करें।
- 2 घायल को आधा उल्टा लिटायें ताकि वह कान नीचे रहे जिससे रक्त बह रहा है
- 3 शीघ्र अस्पताल ले जायें।

पेशाब के साथ लाल रक्त श्राव

पेशाब के साथ लाल रक्त मिला हो और पेशाब करने में दर्द हो तो रक्त मुत्राशय से आ रहा है

उपचार

- 1 मुत्राशय पर ठंडी पट्टी रखें।
- 2 लिटाकर अस्पताल पहुंचायें।

पेशाब के साथ मैले रंग का रक्त श्राव

पेशाब के साथ मैले रंग का रक्त मिला हो और गुर्दों में दर्द का अनुभव हो तो रक्तश्राव गुर्दों से है।

उपचार

- 1 रोगी को उल्टा लिटाकर गुदों के स्थान पर ठंडी पट्टी रखें।
- 2 रोगी को अस्पताल पहुंचायें।

टट्टी के साथ रक्त आना

रक्त आतों से आ रहा है।

उपचार

- 1 खाने पीने का कुछ न दें।
- 2 पेट पर ठंडी पट्टी रखें।
- 3 शीघ्र अस्पताल ले जायें।

भीतरी अंगों से गुप्त रक्त श्राव

यदि जिगर, तिल्ली, क्लोम इत्यादि से रक्तश्राव हो तो रक्त बाहर नी निकलता और पेट के अन्दर भर जाता है।

लक्षण

- 1 चक्कर आना (खड़े होने या बैठने में)
- 2 होठ और मुंह का पीला पड़ जाना।
- 3 ठण्डा पसीना आना।
- 4 नाड़ी कमजोर और तेज हो जाना।
- 5 तेज प्यास लगना।
- 6 श्वास तेज और कठिनाई से ली जाय।
- 7 जम्भाई आए।
- 8 व्यग्रता और अधिक बात करना।
- 9 हाथ और पटकना।
- 10 अचेत हो जाना।

उपचार

- 1 खाने पीने को कुछ न दें।
- 2 शीघ्र अस्पताल ले जायें।

(घ) बिजली का झटका लगना

बिजली से झटका तभी लगता है जबकि विद्युत धारा शरीर में होकर पृथ्वी में जाती है। इस लिये अपनी सुरक्षा के लिये निम्नलिखित उपाय करें।

- 1 हाथों में रबड़ के दस्ताने, पैरों में रबड़ के तले के जूते, चप्पल पहन लें या सूखे अखबारों, लकड़ी अथवा प्लास्टिक पर खड़े हों। गीली वस्तुएं बिजली की सुचालक होती हैं।
- 2 यदि सम्भव हो तो मेन स्विच बन्द कर दें।
- 3 मेन स्विच न बन्द कर सको तो तार झटके से खींच कर या किसी सूखी लाठी या हाकी स्टिक द्वारा तोड़ दो तारों को कैची या चाकू से नहीं काटना चाहिए।
- 4 तारों को आपस में मिलाकर (यदि नंगे हो तो) फ्यूज उड़ा दें।
- 5 घायल को सूखी लकड़ी, सूखी रस्सी या सूखी छड़ द्वारा (छतरी नहीं होनी चाहिए) बिजली के यंत्र से अलग

- कर दें। सावधानी रखें कि उपरोक्त कार्य करते समय अपना कोई अंग बिजली के उपकरण से न छू जाय तथा अलग करते समय घायल का सिर पृथ्वी पर गिरते समय चोट लगने से बचें
- 6 गर्दन और छाती के कपड़े ढीले करें।
 - 7 मुंह में कोई वस्तु हो तो बाहर निकाल दें।
 - 8 तुरन्त बनावटी श्वास दें।
 - 9 घायल को कम्बल ढककर गर्म रखें।
 - 10 यदि आघात के लक्षण हों तो आघात का उपचार करें।
 - 11 यदि कहीं बिजली से जल गया हो तो जले का उपचार करें।
 - 12 श्वास चालू होने पर भी देखभाल रखें कि श्वास फिर बन्द न हो जाय।
 - 13 घायल को अस्पताल पहुंचायें।

(इ) विष, गैसों और अम्ल

विष (जहर)

वे पदार्थ जो शरीर में प्रवेश करने पर शारीरिक क्रियाओं में बाधा डालें और पर्याप्त मात्रा में होने पर मृत्यु का कारण बन जाये विष कहलाते हैं। इनको प्रायः 4 भागों में बांटा गया है।

श्वास के साथ अन्दर जाने वाली विषैली गैसों

जैसे कोल गैस, कार्बन मोनो आक्साइड इत्यादि।

प्रभाव

विषैली गैसों के श्वास प्रणाली में जाने से वे रक्त में मिल जाती है और श्वास बन्द हो जाती है।

उपचार

- 1 कमरे में घुसने से पहले नाक तथा मुंह पर मोटे कपड़े अथवा रोयेदार तौलिये को मुंह पर भिगोकर बांध लें। तथा गहरा श्वास खींचें।
- 2 कमरे के दरवाजे और खिड़कियां खोल दें या तोड़ दें।
- 3 घायल की गर्दन और छाती के कपड़े ढीले कर दें।
- 4 मूर्च्छित व्यक्ति को खुली ताजी हवा में ले जायें।
- 5 बनावटी श्वास देना प्रारम्भ करें।

मुंह द्वारा खाये जाने पर पाचन प्रणाली पर प्रभाव डालने वाले विष

जैसे शंखिया, गला सड़ा भोजन, पारे के लवण आदि।

प्रभाव

- 1 पेट में जलन होती है और दर्द होता है।
- 2 जी मिचलाता है और उल्टी आती है।
- 3 दस्त लग जाते हैं और पेट में मरोड़ होती है।
- 4 श्वास घबराहट के साथ आती है।
- 5 अन्त में मूर्छा आ जाती है।

उपचार

- 1 बचा हुआ विष, विष की शीशी और रोगी की उल्टी बोतल में भरकर जांच के लिए सुरक्षित रखें।
- 2 यदि रोगी होश में हो तो अंगुलियां गले में डालकर अथवा नमक मिला गरम पानी काफी मात्रा में पिलाकर उल्टी कराएँ (एक गिलास पानी में दो बड़ी चम्मच नमक) विष निकल जाने पर दो गिलास दूध (घी मिला हुआ कच्चा अण्डा मिला हुआ या केवल दूध) अथवा पानी पीने को दें।
- 3 तुरंत अस्पताल ले जायें।

मुंह द्वारा खाये जाने पर नाड़ी संस्थान पर प्रभाव डालने वाले विष

जैसे अफीम, धतूरा, शराब व दर्द में खाने वाली गोलियां (ए.पी.सी. आदि) नींद लाने वाली गोलियां इत्यादि।

प्रभाव

इन विषों के खाने से शराब में आलस्य व नशा होता है, फिर मूर्छा आ जाती है। कुछ विषों के कारण शरीर ऐंठने लगता है। अफीम खाने से आंखों की पुतलियां सिकुड़ जाती हैं। धतूरा खाने से आंखों की पुतलियां फैल जाती है।

उपचार

इन विषों में भी उसी विषो के सामान उपचार करें जो पाचन प्रणाली पर प्रभाव डालते हैं।

मुंह द्वारा खाये जाने पर जलाने वाले विष

जैसे तेजाब (गंधक का तेजाब, नमक का तेजाब, शोरे का तेजाब आदि) व क्षार कास्टिक सोडा, चूना आदि।

प्रभाव

इन वस्तुओं के खाने से होठ, मुंह, भोजन नलिका और अमाशय जल जाते हैं इसलिए :-

- 1 होठों पर और मुंह में पीले अथवा काले घाव हो जाते हैं जिनमें जलन होती है।
- 2 भोजन नलिका व अमाशय में तीव्र पीड़ा होती है।

उपचार

- 1 पिये हुए पदार्थ की शीशी जांच के लिए रखें और निर्णय करें कि तेजाब पिया है या क्षार पिया है।
- 2 यदि तेजाब पिया है तो केवल पानी या एक गिलास पानी में एक चम्मच मीठा सोडा मिलाकर जितना रोगी पी सके पिलायें अथवा बराबर का पानी मिलाकर चुने का पानी पिलायें।
- 3 यदि क्षार पिया है तो केवल पानी या एक गिलास पानी में एक चम्मच सिरका मिला कर जितना रोगी पी सके पिलायें।
- 4 धीरे-धीरे घी चटायें।
- 5 अस्पताल ले जायें।

अम्ल तथा क्षार की पहचान करना

तेजाब नीले लिटमस को लाल कर देते है और स्वाद में खट्टे होते है। क्षार लाल लिटमस को नीला कर देते हैं। हल्दी के पीले रंग को लाल कर देते हैं और स्वाद में कड़वे तथा छूने में साबुन जैसे चिकने होते हैं।

(घ) बनावटी श्वाँस देने की विधियां

यदि घायल की छाती या सामने के भाग में कोई चोट नहीं है तो उसे उल्टा लिटाया जा सकता है। यदि घायल सीधा लेटा हो तो उसे उल्टा लिटायें। उल्टा लिटाने के लिये घायल की दोनों बांहों को ऊपर सिर की ओर सीधा करें और एक टांग को दूसरी टांग के ऊपर रखें। अपने एक हाथ को घायल के चेहरे के नीचे लगाकर दूसरे हाथ से घायल के

कूल्हे पर सहारा देकर उसे उल्टा कर दें। हाथों को मोड़कर सिर के नीचे रखें तथा मुंह एक ओर को टेढ़ा कर दें। ध्यान रहे कि उल्टा लिटाते समय घायल के नाक मुंह इत्यादि में जमीन की रगड़ न लगे। घायल की जबान रुमाल से पकड़ कर बाहर की ओर करें। श्वास देना आरम्भ करें।

श्वाँस देने की तीन विधियां हैं

- 1 होलगर नील्सन विधि
- 2 शेफर्स विधि
- 3 मुंह से मुंह लगाकर श्वास देना

होलगर नील्सन विधि

- 1 मूर्छित व्यक्ति के सिर की ओर अपना एक घुटना मोड़कर और दूसरा घुटना खड़ा करके बैठें फिर दोनों हाथ पीठ पर रखकर 2 सैकन्ड तक दबाव डालें। कुहनियां सीधी रहनी चाहिए।
- 2 पीछे हटें और अपने हाथों को घायल के हाथों के कुहनी तक ले जायें।
- 3 घायल के हाथों को थोड़ा सा ऊपर की ओर सहारा दें। हाथों को केवल सहारा देना है ताकि छाती में श्वाँस चली जाय, ऊपर नहीं उठना है।
- 4 फिर पहली क्रियाओं को दोहरायें। दूसरी और तीसरी क्रिया में 3 सैकन्ड लगने चाहिए।

शेफर्स विधि

- 1 मूर्छित व्यक्ति के बगल में दोनों घुटने मोड़कर एड़ियों पर बैठें।
- 2 हाथों को घायल की कमर पर इस प्रकार रखें कि अंगूठे रीढ़ की हड्डी पर रहें, और अंगुलिया भूमि की ओर अंतिम पसलियों के ऊपर रहें। कुहनियां सीधे रहे।
- 3 हाथों को सीधा रखते हुए हथेली से आग और नीचे की ओर दो सैकन्ड के लिए दबाव डालें। दबाव डालते समय घुटनों पर खड़े हो जायें।
- 4 फिर एड़ियों पर बैठ जायें ताकि श्वाँस अन्दर आ जाए। बैठने में तीन सैकन्ड लगने चाहिए।
- 5 इसी तरह जब तक घायल को श्वास न आ जाए पहली क्रियाओं को दोहरायें।
- 6 दबाव अपने शरीर के भार से ही डालनी चाहिए माँस पेशियों की शक्ति से हाथ को नहीं दबाना चाहिए।
- 7 पतले दुबले घायलों पर दबाव हल्का डालना चाहिए और छोटे बच्चों पर दबाव और भी हल्का होना चाहिए।

मुंह से मुंह लगाकर श्वाँस देना

संकट कालीन स्थिति में मुंह से मुंह लगाकर श्वाँस देना चाहिए। घायल के कंधों के नीचे तकिया या कपड़ा लगकर ऊंचा करें ताकि गर्दन पीछे लटक जाय। घायल के मुंह पर जाली या कोई बारीक कपड़ा रखकर, अपना मुंह लगाकर जोर से फूंक मारें/मुंह हटा मारें/श्वास लेकर फिर फूंक मारें इसी प्रकार एक मिनट में 12-15 फूंक मारें जब तक कि घायल की श्वाँस चलने न लगे।

(छ) हताहतों को ले जाना

जब केवल एक वाहक (ले जाने वाला) उपलब्ध हो

कंधे से सहारा देकर ले जाना

जब घायल होश में हो और चलकर जाने योग्य हो तो कंधे का सहारा देकर ले जा सकते हैं। यदि हाथ में चोट है तो वाहक स्वस्थ हाथ की ओर खड़ा होकर, घायल को कमर पर एक हाथ से पकड़ें और घायल को अपनी ओर का हाथ

अपनी गर्दन के पीछे होकर कंधे पर लगाकर उसे अपने दूसरे हाथ से पकड़कर सहारा देते हुए ले जाए।

पीठ पर लादकर ले जाना

जब घायल होश में हो और हाथों से पकड़ने योग्य हो परन्तु चलने में असमर्थ हो तो उसे पीठ पर लादकर ले जा सकते हैं। घायल को पीठ पर बैठकर वाहक उसके दोनों घुटनों को हाथों को बाहर से नीचे ले जाकर पकड़े। घायल अपने दोनों हाथों को वाहक की दाती पर ले जाकर आपस में पकड़ें और इस प्रकार वाहक घायल को ले जाए।

आग बुझाने वालों की विधि द्वारा ले जाना

जब घायल मूर्छित हो तो उसे इस विधि द्वारा ले जाया जा सकता है। घायल को सहारा देकर वाहक अपने सामने अपनी ओर उसका मुंह करके खड़ा करें। अपने बायें हाथ से घायल का दाहिना हाथ पकड़कर अपना दाहिना कंधा नीचे झुकायें। अपने दूसरे हाथ को घायल की टांगों के बीच से निकाल कर अथवा दोनों टांगों पर लपेटते हुए पकड़ कर घायल को कंधों पर उठावें। दाहिने हाथ से घायल का दाहिना हाथ पकड़कर बायें हाथ को खाली कर लें और घायल को ले जाए।

जब दो वाहक उपलब्ध हों और घायल को बैसाखी पर ले जाने की आवश्यकत न हो।

चार हाथों की सीट

जब घायल बैठने योग्य हो और हाथों से सहारा दे सकता हो तो इस विधि द्वारा ले जाया जा सकता है। दोनों वाहक घायल के पीछे खड़े होकर अपने दाहिने हाथ से अपनी बांयी कलाई और बाएं हाथ से एक दूसरे को दाहिनी कलाई पकड़कर चार हाथों की सीट बनाएं। कुछ झुक कर घायल को सीट पर बिठाएं। घायल दोनों हाथों से दोनों वाहक का कंधा पकड़ें और वाहक घायल को ले जायें।

दो हाथों की सीट

जब घायल मूर्छित हो तो उसे इस विधि द्वारा ले जाया जा सकता है। वाहक घायल के दोनों ओर आमने सामने मुंह करके खड़े हों। घायल के सिर की ओर के हाथों को उसकी कमर के नीचे डालकर दूसरी ओर से कपड़े पकड़ लें। घायल के पैरों की ओर के हाथों को घायल के जांघों के नीचे डालकर, अंगुलियां मोड़कर और बीच में कोई कपड़ा रुमाल लगाकर आपस में पकड़ें। घायल को इस दो हाथों की सीट पर बिठाकर ले जाएं और आगे गिरने से रोके रहें।

जब दो या दो से अधिक वाहक उपलब्ध हो, घायल को बैसाखी पर ले जाना हो।

लगभग 7-8 फुट लम्बे दो लट्ठों पर 6 फुट लम्बाई में कैनवास लगाकर बैसाखी बनायी जाती है। कैनवास के नीचे दोनों लट्ठे लोहे के छड़ द्वारा जुड़े होते हैं। यदि बनी हुई बैसाखी न मिले तो दो अनाज भरने की बोरियों को एक दूसरे के ऊपर मुंह की ओर चढ़ाकर, कोनों में छिद्र करके दो लाठियां डालकर चलाऊ बैसाखी बनाई जा सकती है। दोनों लाठियों को अलग रखने के लिए दो छोटी लकड़ियां पट्टियों से दोनों ओर बांध देनी चाहिए। इस प्रकार दरी, मोटी चादर कम्बल दो लाठियों पर लपेटकर बैसाखी बनायी जा सकती हैं। चारपाई, बांस, किवाड़ अथवा तख्तों से भी बैसाखी का काम लिया जा सकता है। बैसाखी वाहको की टोली प्रायः चार व्यक्तियों की होती है। साधारण स्थिति में घायल को ले जाते समय उसके पैर आगे रहने चाहिए।

9. खपत होने वाले, बिगड़ जाने वाले, ज्वलनशील तथा भंगुर भंडारों को लाने ले जाने और उनके भंडारण की जानकारी

उपरोक्त ज्वलनशील पदार्थों में पेट्रोल, डीजल व मिटटी का तेल अत्यन्त ज्वलनशील है। अतः इन्हें अलग दूसरे सामान से अलग भण्डार किया जायेगा। जो सामान अधिक इशु किया जाता है, उसे अलग भण्डार करते हैं ताकि पूरा

स्टोर खोलने की आवश्यकता न पड़े। जैसे मिट्टी का तेल, एक्सल आयल।

भंगुर सामान जैसे सिगनल के बल्ब, सिगनल एवं इंडिकेटर के शीशे, कांच के ग्लास विभिन्न प्रकार के क्राकरी के सामान, थर्मस आदि इनको दूसरे सामानों से अलग जहां हमेशा पहुंच न हो भण्डार करना चाहिए। इन सामानों को लाते ले जाते समय भली भांति पैकिंग करके लाना ले जाना चाहिए। भारी सामानों को ट्राली या कार से ले जाना/लाना चाहिए। ट्राली को लादते या खाली करते समय ध्यान देना चाहिए।

10. तूफान, वर्षा, जंग गलने और आग के कारण होने वाले नुकसान से बचाव

सभी सामान, औज़ार अच्छी हालत में ठीक से बने शैल्फ या अलमारी में रखना चाहिए। सारे सामान, उपकरण आदि साफ सुथरा ठीक तरह से तेल लगाया हुआ रखना चाहिए ताकि तुरन्त प्रयोग में लाया जा सके। भण्डार कक्ष इस प्रकार का बना होना चाहिए जिसमें वर्षा का पानी, रेत, मिट्टी आदि न जा सके। छते व दिवार सीमेंट की बनी हों ताकि आग लगने का खतरा न हो। सीमेंट के कटटे ज्यादा मात्रा में भण्डार न करें, और पुराना सामान पहले इश्यु करें। खुले में वही सामान रखें जिनपर वर्षा, गर्मी, सर्दी का असर न हो जैसे केबिल सिगनल बेस, राडिंग रन, ट्रेसल, सिगनल पोस्ट, लोकेशन बाक्स, लीवर आदि। गोदाम में खुली आग ले जाना या बीड़ी सिगरेट आदि पीना बिल्कुल मना है।

समाप्त

प्रश्नावली

1. अग्निशामक की कितनी किस्में हैं तथा ये किस प्रकार की आग बुझाने के लिए उपयोग होते हैं? संक्षेप में बताएँ।
2. मनुष्य के आग से जल जाने पर बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में संक्षेप में बताएँ।
3. श्वास देने की विधियाँ कौन-कौन सी हैं? प्रत्येक के बारे में संक्षेप में बताएँ।
4. बिजली के झटके से अपनी सुरक्षा के लिए आप क्या उपाए करेंगे? संक्षेप में बताएँ।
5. आग बुझाने वाली एजेंसियों को दी जाने वाली जानकारी व सहायता तथा चेतावनी जारी करने के उपायों के बारे में संक्षेप में बताएँ।